DECISION MAKING

निर्णय / फैसला

निर्णय का एक्शन प्लान

पहले सोचें फिर निर्णय लेवें..... पृष्ठ 168

निर्णय लेने में दूरदर्शिता दिखावें..... पृष्ठ 184

सही निर्णय कैसे लेवें..... पृष्ठ 173

माता-पिता सही रास्ता दिखावें..... पृष्ठ 188

DECISION MAKING

निर्णय

फैसला आपको करना है

जब आप गलत सड़क पर हैं तब फिर दौड़ने का क्या फायदा? सही सड़क पर ही दौड़ें।

—राम बजाज

रास्ते नहीं, मंजिल तय करें।

—राम बजाज

उचित समय पर उचित निर्णय लेवें।

—राम बजाज

जीवन में कामयाबी पाने के लिए उचित समय पर उचित निर्णय लेना बहुत जरूरी है। अकसर देखा जाता है कि मंजिल की तलाश में कोई भी रास्ता बिना सोचे समझे अपना लेते हैं, जो मंजिल पाने के लिए सही नहीं कहा जा सकता। अगर हमें पता नहीं है कि हमें जाना कहाँ है तो रास्ता बेशक कितना भी सही क्यों न हो—हमें नहीं अपनाना चाहिए। इससे जिन्दगी भटकाव में निकल जाती है और जब हम परिणाम की प्रतीक्षा में लगे रहते हैं तो हाथ में लगता है शून्य यानी ZERO। अतः जिन्दगी में कामयाबी पाने के लिए रास्ते नहीं, मंजिलें तय करें।

पहले सोचें, फिर निर्णय लेवें (अरबी कहानी)

First think then take the Decision

अरब देश का कठोर शासक चंगेज खाँ अपने हाथ पर अपने प्रिय शिकरा (बाज) पक्षी (शिकार में सहायक पक्षी) को बिठाए हुए, शिकार के लिए दिन-भर प्रयत्न करने के बाद भी जब शिकार नहीं मिला, तो अपनी प्यास बुझाने की खोज में काफी भटकने के बाद एक स्थान पर पहुँचा। वहाँ किसी पहाड़ी से बूँद-बूँद पानी टपक रहा था। उसने अपने झोले से चाँदी का कटोरा (प्याला) निकाला और टपक रही बूँदों के नीचे लगा दिया। बढ़ती प्यास को बुझाने के लिए जैसे ही प्याला मुँह पर लगाया, उसके प्रिय शिकरा ने फड़फड़ाकर प्याले को नीचे गिरा दिया। यह क्रम तीन बार चलता रहा। अब कठोर शासक चंगेज खाँ की प्यास बहुत ज्यादा बढ़ चुकी थी। उसने शिकरा को सम्बोधित करते हुए कहा, 'इस बार अगर तुमने प्याले को गिरा दिया तो मैं तुम्हें मार दूँगा।' हुआ भी ऐसा ही। पक्षी शिकरा ने फिर चौथी बार भरे हुए प्याले को झपट कर गिरा दिया परन्तु चंगेज खाँ की तलवार के वार से बच नहीं सका, वहीं ढेर हो गया। चंगेज खाँ ने उस शिकरा से कहा, 'यही तेरा दण्ड है।'

अब सम्राट ने प्याला खोजना शुरू किया, तो प्याला वास्तव में दो पहाड़ियों के मध्य में ऐसे स्थान पर फँस गया जहाँ से निकालना मुश्किल था। अतः सम्राट चंगेज खाँ ने सोचा कि पहाड़ी पर चढ़कर वहाँ पहुँचा जावे जहाँ से पानी की बूँदें टपक रही थीं। वहाँ पहुँचकर चंगेज खाँ ने एक भयानक दृश्य देखा। एक काले-सफेद धब्बों वाला विषैला, भीमकाय जीवधारी मरा पड़ा है, पानी (जहर) उसी के शरीर से बूँद-बूँद टपक रहा था। सम्राट भय से सिहर उठा और प्यास भी भूल गया। उसे अपना प्रिय शिकरा याद आ गया जिसे उसने मार डाला। शिकरा पक्षी ही बार-बार अपने सम्राट को मृत्यु से बचा रहा था। उसने प्रिय पक्षी शिकरा के साथ अन्याय किया। वह महल की ओर तेजी से चल पड़ा और मन-ही-मन में कहने लगा था, 'आज मैंने एक कठिन पाठ पढ़ा है। मैंने सीखा है कि आवेश, क्रोध अथवा बिना सोचे-समझे किसी भी प्रकार का

निर्णय नहीं करना चाहिए।' अपने हितैषी और स्वामीभक्त 'शिकरे' के प्राण लेने से पूर्व यह बात उसके समझ में क्यों नहीं आई?

अक्लमन्द इंसान पहले सोचता है फिर कोई कार्य करने का निर्णय लेता है। मूर्ख पहले कार्य करता है, फिर सोचता है। अतः निर्णय करने से पहले सिक्के के दोनों पहलुओं की जाँच कर लेना ही समझदारी और अक्लमन्दी की निशानी है। एक इंसान गलती के बाद सुधार नहीं करता है, तो वह दूसरी गलती कर रहा होता है। मूर्खों से अपनी प्रशंसा सुनने की अपेक्षा, बुद्धिमानों की लताड़ सुनना ज्यादा श्रेयस्कर है। बुद्धिमान व्यक्ति तो मूर्खों से भी शिक्षा प्राप्त कर लेता है जबकि मूर्ख लोग बुद्धिमानों से कुछ भी प्राप्त करने के प्रयास नहीं करते। सदैव दूसरों से एक कदम आगे सोचने का प्रयास करें। पर यह आप तभी जान सकेंगे, जब आप जान जायेंगे कि औरों के सोचने की हद (Limit) क्या है?

निर्णय लेना क्या है?
What is Decision Making ?

निर्णय एक श्रेष्ठ कलात्मक प्रक्रिया है जिसमें कार्य के सम्बन्ध में उपलब्ध विभिन्न विकल्पों में से किसी एक विकल्प का चुनाव किया जाना है।

निर्णय की क्रियाविधि (Course of action) के विभिन्न विकल्पों में से किसी एक का चयन करना है।

—कूँज तथा वहिरिच

Decision making is the selection from among alternatives of a course of action.

—Koontz and Weihrich

Good Decision making bring energy to your life.

—राम बजाज

जीवन निर्णयन प्रक्रिया से गुजरता है। प्रत्येक व्यक्ति अपने निजी जीवन के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित अनेक निर्णय करता ही रहता है। क्या खाना, क्या पहनना, क्या करना, क्या नहीं करना, घूमने जाना या

आराम करना, आदि दैनिक जीवनचर्या सम्बन्धी प्रश्नों पर हम निर्णय करते ही रहते हैं। इसी तरह हम कुछ निर्णय ऐसे भी करते हैं जो सम्पूर्ण जीवन या अधिकांश जीवन को प्रभावित करते हैं।

किसी मानदण्ड के आधार पर दो या अधिक सम्भावित विकल्पों में से किसी एक का चयन करना निर्णयन है।

—टेरी

Decision Making is the selection based on some criteria from two or more possible alternatives.

—Terry

निर्णयन एवं निर्णय में अन्तर क्या है?
What is Difference between Decision Making & Decision

यहाँ स्पष्ट रूप से समझ लेना चाहिए कि Decision Making (निर्णयन) एवं Decision (निर्णय) दोनों में अन्तर है। निर्णयन एक प्रक्रिया (Process) है—जो निर्णय करने के लिए अपनाई जाती है—जबकि निर्णय (Decision) निर्णयन (Decision Making) प्रक्रिया का निष्कर्ष है। निर्णय (Decision); निर्णयन प्रक्रिया में एक बिन्दु या स्थिति है। यह वह बिन्दु (Point) है जहाँ विकल्प का अन्तिम रूप से चयन किया जाता है।

किन्तु, निर्णयन प्रक्रिया अनेक पदों की प्रक्रिया है जिस में निर्णय के लिए भिन्न-भिन्न कार्य किये जाते हैं। निर्णय (Decision) तो सम्पूर्ण निर्णयन प्रक्रिया का सार या निष्कर्ष या आखिरी बिन्दु है। निर्णय के साथ ही अनिश्चय की स्थिति समाप्त होती है तथा निश्चितता जन्म लेती है।

क्या सही या गलत निर्णय से आदमी या टीम का भविष्य बदला जा सकता है?

फ्रांस ने विश्व फुटबाल का खिताब अपने देश में; 1998 में जीता था। उस वक्त विश्व फुटबाल का खिताब दिलाने वाला उस टीम का कप्तान जिनेदिन जिदाने (Zinedine Zidane) था—जिसने उस साल असम्भव कार्य को सम्भव करके दिखलाया था।

सन् 2002 की विश्व फुटबाल प्रतियोगिता में फ्रांस को विश्व खिताब जीतने के कारण स्वतः ही Qualify कर दिया गया था। सन् 2002 का विश्व कप एशिया में जापान, कोरिया में खेला गया था।

फ्रांस को पहले चक्र (First Round) में तीन टीमों से मैच खेलने थे। चूँकि उनका कप्तान जिनेदिन जिदाने एक अभ्यास मैच में (Injured) घायल हो गया था और पहले चक्र (First Round) के पहले दो मैच इस Injury (चोट) के कारण खेल नहीं पाया था। उसके दूसरे चक्र में उत्तीर्ण (qualify) होने के लिए तीसरे मैच का जीतना जरूरी था अन्यथा फुटबाल की प्रतियोगिता से फ्रांस बाहर।

कोच व कप्तान के बीच विचार-विमर्श हुआ। हालांकि जिनेदिन जिदाने पूर्ण रूप से Fit (फिट) नहीं हुआ था परन्तु इन दोनों ने तीसरे मैच में खेलने का निर्णय लिया।

तीसरा मैच डेनमार्क के साथ था। जिनेदिन जिदाने इस मैच में खेला परन्तु पूरा फिट नहीं होने के कारण वो कुछ भी कर नहीं सका। जिस व्यक्ति ने सन् 1998 में विश्व फुटबाल का खिताब दिलाया था—घायल अवस्था व अयोग्य (Unfit) होने के कारण एक भी गोल नहीं कर सका। फ्रांस विश्व फुटबाल प्रतियोगिता से बाहर हो गया। बाद में कोच व कप्तान ने निष्कर्ष निकाला कि इस तीसरे मैच में जिनेदिन जिदाने की जगह दूसरा खिलाड़ी होता तो वे यह तीसरा मैच जीत सकते थे। कोच व कप्तान का निर्णय गलत साबित हुआ।

गलत निर्णय से टीम का भविष्य बदला जा सकता है

बात है विश्व फुटबाल कप 2002 में आखिरी 16 टीमों के मैच की अलग-अलग ग्रुप के शीर्ष व उनके नीचे वाली टीमों के बीच मुकाबले में कोरिया व इटली के बीच मैच होना था। प्रतियोगिता का 56वाँ मैच डिएजीओन (Deageon) स्टेडियम में खेला जाना था। वहाँ के स्थानीय समय के अनुसार मैच 2 बजे आरम्भ हुआ। मैच

के शुरुआती दौर में इटली ने दो गोल अलग-अलग समय किए परन्तु लाइनमैन ने उन दोनों गोलों को ऑफसाईड (Offside) करार दिया। टेलीविजन रि-प्ले (Replay) देखने पर मालूम हुआ कि लाइनमैन के दिये हुए दोनों गोल ऑफसाइड (Offside) नहीं थे परन्तु मानवीय भूल के कारण उन्हें Offside (ऑफसाइड) करार करने के बाद भी मैच जारी रहा। दोनों एक-एक गोल कर के 90 मिनिट के खेल में बराबर रहे परन्तु अतिरिक्त समय (Extra Time) के खेल में आखिरी क्षणों में कोरिया ने इटली पर एक गोल दागकर मैच जीत लिया और कोरिया को क्वाटर फाइनल में प्रवेश मिल गया। परन्तु इटली की टीम हारने के कारण प्रतियोगिता से बाहर हो गई।

एक लाइनमैन की गलती से दो गोलों को ऑफसाइड (Offside) करार का निर्णय देने से एक टीम (इटली) हार गई और दूसरी टीम—कोरिया—प्रतियोगिता के अगले दौर में प्रवेश कर गई। एक गलत निर्णय से एक टीम को हारना पड़ा तथा दूसरी टीभ इस हार के कारण अपने-आप जीत गई। एक सही या गलत निर्णय से आदमी का भविष्य बदला जा सकता है।

गलत निर्णयों का असर (Effect of Wrong Decision)

(1) नेपोलियन बोनापार्ट जब एक से बढ़कर एक आक्रमण करते हुए विजय प्राप्त कर रहा था तो एक गलत निर्णय से अपनी बची हुई सेना के साथ वापिस आया था। बात सन् 1812 की है जब नेपोलियन बोनापार्ट ने एक निर्णय करके रूसी सेना पर चढ़ाई कर दी थी। उस वक्त वहाँ कड़ाके की ठंड थी। इस कँप-कँपाती ठण्ड से नेपोलियन की सेना के हौसले पस्त हो गए थे। इस कारण सम्राट नेपोलियन को अपनी बचीखुची सेना को लेकर वापिस फ्रांस आना पड़ा। अगर यह गलत निर्णय नहीं होता तो शायद युद्ध का परिणाम कुछ अलग ही होता।

(2) कुछ इतिहासकार मानते हैं कि राणा प्रताप ने हल्दीघाटी की लड़ाई में कुछ जल्दबाजी में निर्णय करके सामने वाली सेना पर हमला बोल